<u>आलेख</u>

डा. आलोक शर्मा, सह-प्राध्यापक

डा. शिवानी कटोच, सहायक प्राध्यापक

पशु चिकित्सा एवम् पशुपालन प्रसार विभाग,

चौ. सरवण कुमार हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय,

पालमपुर - 176 062

प्रसार पत्रक क्रमांक -10

बछड़ों के प्रमुख रोग

पशु चिकित्सा एवं पशुपालन प्रसार विभाग

पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय,

चौ. स. कु. हि. प्र. कृषि विश्वविद्यालय,

पालमपुर - 176 062

बचाव व रोकथाम : एक ही स्थान पर वहुत से बछड़ों को न रखें । रोगी बछड़ों को स्वस्थ्य बछड़ों से अलग रखें ।

उपचार : पास के पशु-चिकित्सक की तुरन्त सलाह लेकर इलाज करवायें ।

6. पेट के कीड़े (एस्केरियासिस)

दूध पीने वाले बछड़ों के पेट में आमतौर पर लम्बे गोल कीड़े हो जाते है ।

लक्षण : सुस्ती, खाने में अरूचि, दस्त आना तथा आंखो की झिल्ली का छोटा हो जाना इस रोग के लक्षण है ।

बचाव व रोकथाम : बछड़ों को गंदा पानी नही पीने देना चाहिए । चूकि रोगी बछडे के गोबर में इन कीड़ों के अंडे होते है अतः स्वस्थ बछड़ों को रोगी बछड़ों के गोबर आदि से दूर रखना चाहिए बछड़ों के गोबर की समय-समय पर जांच करानी चाहिए।

उपचार : रोग का संदेह होने पर तुरन्त ही पास के पशु-चिकित्सक से सलाह लें।

बछड़ों के प्रमुख रोग

बछड़े-बछड़ियां गौ पालकों की महत्वपूर्ण पूंजी होते हैं । आपके गाय का बच्चा बढ़िया बैल, सांड़ या अधिक दूध देने वाली गाय तभी बन सकते हैं जब आप उनकी अच्छी देख-रेख करें और उन्हें बीमारियों से बचायें । कुछ खास-खास बीमारियों (जो थोड़ी सी लाहपरवाही से छोटे बच्चों में हो जाती है और जिनमे भारी नुक्सान होता है) के विषय में मोटी-मोटी बातें नीचे लिखी है । उनको ध्यान में रखने एवं समय-समय पर कार्यवाही करने से बच्चों को बीमारी से बचाया जा सकता है ।

1. नाभि सड़ना (नैवेल इल)

यह बीमारी हाल ही में पैदा हुए बच्चों में होती है । इसमें नाभि में मवाद पड़ जाता है । रोग के आरम्भ में बछड़ा सुस्त हो जाता है, लेटा रहता है, दूध नहीं पीता । तेज बुखार आता है और बछड़ा सांस जल्दी-जल्दी लेता है । नाभि गीली व चिपचिपी दिखलाई पड़ती है । एक दो दिन बाद सूजन बढ़ने पर नाभि गर्म व सख्त हो जाती है और उसमें बहुत दर्द होता है । कभी-कभी घुटनों व जोड़ों में सूजन आ जाने के कारण बछड़ा लंगड़ाने भी लगता है ।

बचाव व रोकथाम : इस बीमारी की रोकथाम के लिए निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए ।

(क) बछड़ा पैदा होने का स्थान साफ सुथरा रखिए ।
(ख) नाड़ गिरने के बाद नाभि को किसी कीटाणुनाशक दवा से साफ करके प्रतिदिन टिंचर-आयोडीन उस समय तक लगाते रहना चाहिए जब तक नाभि बिल्कुल सूख न जाये ।

उपचार : रोग के लक्षण मालूम पड़ते ही पास के पशु चिकित्सक की तुरन्त सलाह ले और आवश्यक इलाज करवायें ।

2. सफेद दस्त (व्हाइट स्काउर)

यह बछड़ों का एक प्राण घातक रोग है जिसमें 24 घण्टे में मृत्यु हो जाती है । यह रोग एक माह तक के बच्चों को होता है ।

रोग के आरम्भ में बुखार आता है । भूख कम लगती है और बदहजमी हो जाती है। कुछ समय बाद पतले दस्त आने लगते है जो गन्दे सफेद या पीलापन लिए हुए होते है । कभी-कभी खून भी आता है तथा एक विशेष प्रकार की बदबू होती है । कभी-कभी पेट फूल जाता है ।

बचाव व रोकथाम : बच्चों को पर्याप्त मात्रा में खीस (कोलोस्ट्रम) पिलायें तथा गंदगी से बचायें ।

उपचार : रोग के लक्षण मालूम होने पर तुरन्त पशु चिकित्सक की सलाह लें ।

3. न्यूमोनिया

यह बीमारी आमतौर पर 3 सप्ताह से लेकर चार माह तक के बच्चों में सबसे अधिक होती है । गन्दे सीलन-युक्त स्थान में यह रोग अधिक फैलता है ।

रोग के आरम्भ में बछड़ा सुस्त हो जाता है खाने में रूचि नही रहती । सांस तेजी से लेता है, और खांसी भी आती है । आंख व नाक से पानी बहता है और बुखार तेज हो जाता है । रोग बढ़ने पर नाक से बहने वाला पानी गाढ़ा व चिपचिपा हो जाता है । सांस लेने में कठिनाई होती है । खांसी तेज हो जाती है और अन्त में मृत्यु हो जाती है ।

बचाव व रोकथाम : बछड़ों को साफ व हवादार कमरे में, जिसमें सीलन न हो और तेज हवा के झोंके न आते हो, रखना चाहिए । स्वस्थ बछड़ों को रोगी बछड़ों से अलग रखें । लक्षण दिखते ही पशु चिकित्सक से इलाज के लिए सम्पर्क करें ।

4. मुँहा रोग (काफ डिप्थीरिया)

यह छोटे बछड़ों का रोग है जिसमें मुंह व तालू में घाव हो जाते है । सुस्ती, खाने में अरूचि, मुंह से लार बहना तथा बुखार इस रोग के प्रमुख लक्षण हैं । मुंह खोलने पर जीभ मसूढ़ों तालू व गले में फफोले दिखालाई पड़ते है जो बाद में घाव बन जाते है । इनकी वजह से बछड़ा खाना चबा नहीं सकता है ।

बचाव व रोकथाम : खाने व पानी के बर्तन साफ रखना चाहिए । रोगी बछड़ों को स्वस्थ्य बछड़ों से अलग रखें ।

उपचार : लक्षण मालूम होते ही तुरन्त पास के पशु-चिकित्सक से राय लेकर इलाज करायें ।

5. पैराटाइफाइड

यह 2 से 12 सप्ताह की आयु के बछड़ों को होने वाला रोग है । गंदगी और बहुत से बछड़ों को एक जगह रखने से रोग अधिक फैलता है ।

लक्षण : तेज बुखार, खाने में अरूचि, थूथन सूख जाना, आंखों में चिपचिपापन तथा सुस्ती इस रोग के प्रमुख लक्षण है । रोगी के गोबर का रंग पीला या गंदला हो जाता है और उसमें एक विशेष प्रकार की बदबू आती है ।